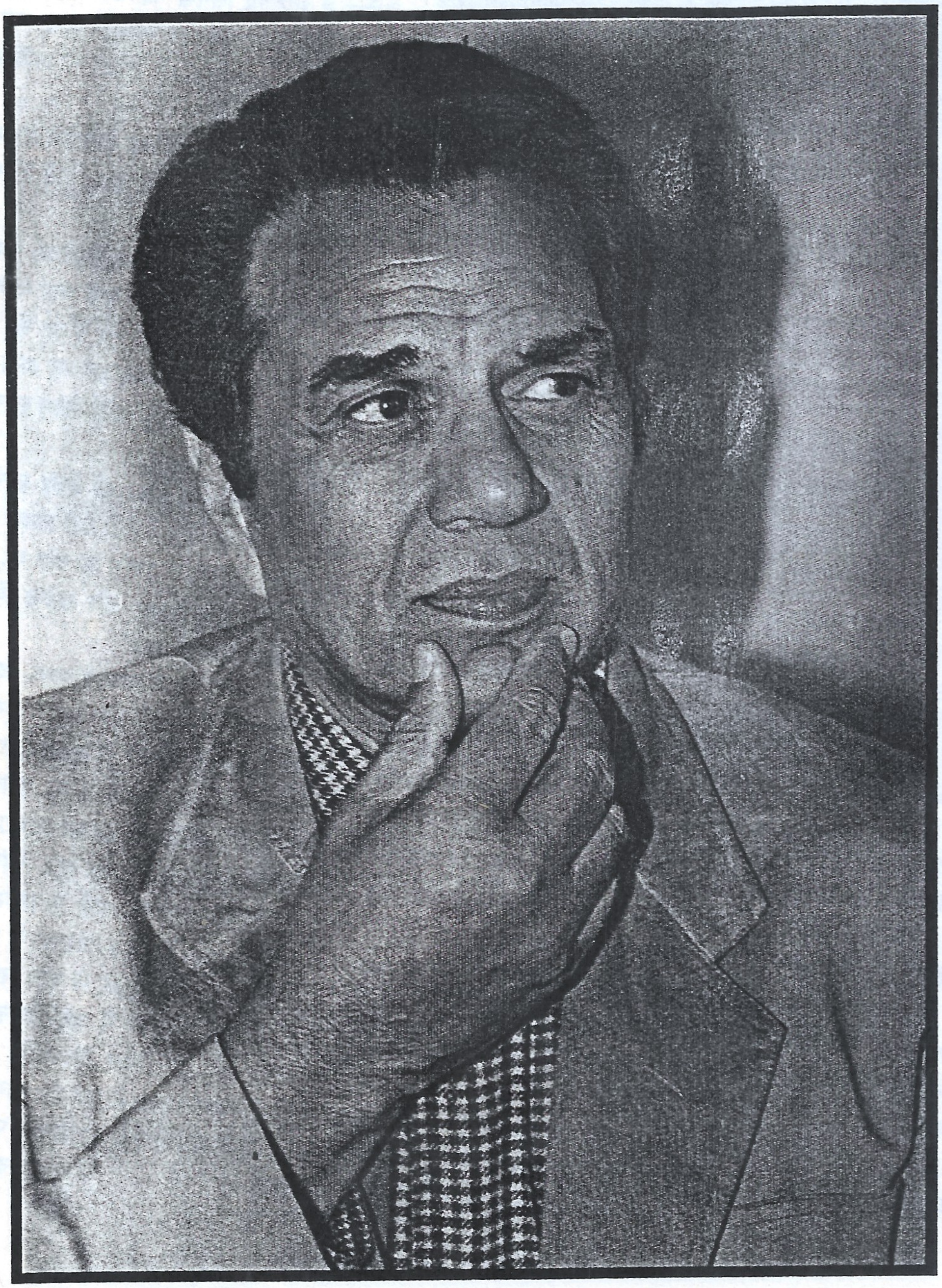
# यादगार हादसे

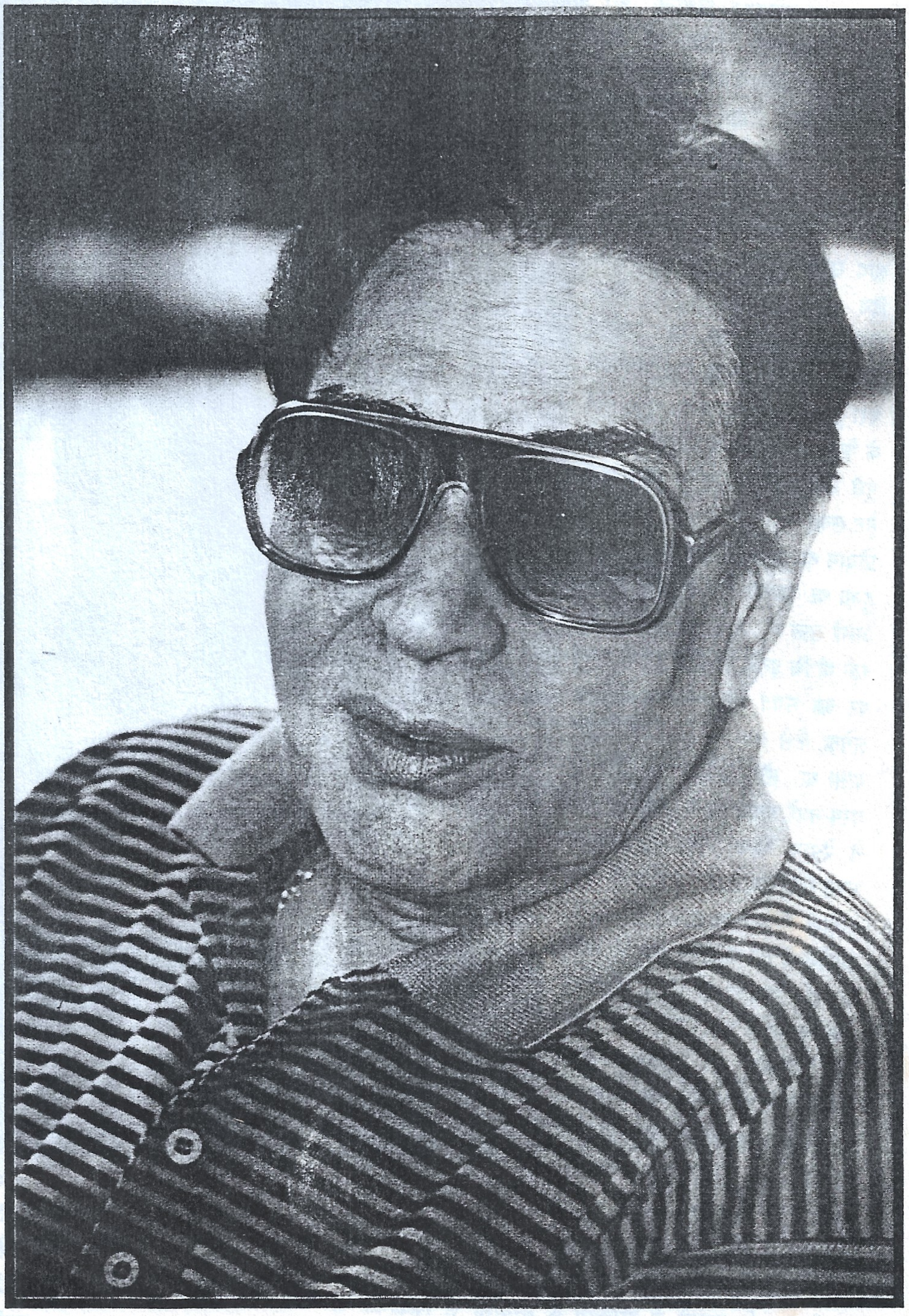
## जब *फूल और पत्थर* देखने आये नेताओं पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया

बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि ओ.पी. रल्हन की फिल्म *फूल और पत्थर* से पहले धर्मेंद्र बस यों ही घिसट रहे थे. लेकिन इस फिल्म के बाद उनका सितारा चमक उठा. इसी फिल्म में मीना कुमारी के साथ उनके रोमांटिक संबंधों का रोमांटिक सफर शुरु हुआ जिसने कई मोड़ लिए. इसी फिल्म के बाद धर्मेंद्र इंडस्ट्री के हीमैन के रूप में मशहूर हुए. यह भी कम दिलचस्प नहीं है कि *फूल और पत्थर* में ओ.पी. रल्हन पहले सुनील दत्त को लेने वाले थे. उन्होंने एडवांस के रूप में सुनील दत्त को साइनिंग एमाउंट भी दे दिया था. अचानक सुनील दत्त को लगा कि *फूल और पत्थर* की कहानी फिल्म *मुझे जीने दो* से मिलती-जुलती है. रल्हन ने उन्हें बहुत समझाया कि *मुझे जीने दो* और *फूल और पत्थर* अलग-अलग विषय हैं लेकिन सुनील दत्त नहीं माने. उन्होंने इस शर्त पर काम करने का इशारा दिया कि रल्हन अगर *फूल और पत्थर* की मूल कहानी में परिवर्तन कर दें तो वह उसमें काम कर सकते हैं. रल्हन ने उनकी यह शर्त मानने से इंकार कर दिया. सुनील दत्त इस पर बहुत नाराज हुए. लेकिन रल्हन ने उनकी नाराजगी की परवाह किए बिना उनकी जगह धर्मेंद्र को साइन कर लिया. *फूल और पत्थर* बनी और बनकर तैयार हुई. उसके रिलीज के समय मुंबई में कांग्रेस का महाधिवेशन चल रहा था. जिसमें शामिल होने के लिए इंदिरा गांधी और तब के कांग्रेस के अध्यक्ष के. कामराज आए हुए थे.



उनकी इच्छा को देखते हुए रल्हन ने *फूल और पत्थर* का स्पेशल शो रखवाया जो उनके लिए बहुत बड़ी मुसीबत बन गया. थियेटर में कुल आठ सौ दर्शकों के बैठने की जगह थी और भर गए थे उसमें दो हजार. थियेटर में तिल रखने की जगह नहीं बची थी. हर तरफ खद्दरधारी और गांधी टोपी वाले ही दिख रहे थे. थियेटर में धंसने के लिए नेताओं और यहां तक कि सांसदों, विधायकों तक ने धक्का-मुक्की और मारापीटी शुरू कर दी. स्थिति इतनी बिगड़ गई कि उन नेताओं को काबू में करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा. यह शायद पहली ऐसी फिल्म थी जिसे देखने आये नेताओं को पुलिस की लाठियां खानी पड़ी थीं.

# मुकाबला हुआ राजेन्द्र कुमार की जूती से डाकू की कुल्हाड़ी का



गुरुदत्त की अचानक मौत के बाद के. आसिफ की महत्वाकांक्षी फिल्म *मोहब्बत और खुदा* खटाई में पड़ गई. पर आसिफ चुप बैठने वाले फिल्मकार न थे. उन्होंने आनन-फानन में *सस्ता खून महंगा पानी* शुरु कर दी जिसके सितारे थे राजेन्द्र कुमार, सायरा बानो, नाजिमा, जयंत और मुकरी. फिल्म की शूटिंग का पहला सैट मोहन स्टूडियो में लगा था. इस फिल्म में डाकू के रोल के लिए के. आसिफ ने पंजाब के गंजे पहलवान को बुलाया था. शॉट था राजेन्द्र कुमार और उस गंजे डाकू में मुकाबले का. डाकू के हाथ में कुल्हाड़ी थी और राजेन्द्र कुमार के हाथ में फकत एक चप्पल. डाकू कुल्हाड़ी से राजेन्द्र कुमार पर वार करता और राजेन्द्र कुमार मौका पाकर उसके गंजे सिर पर चप्पल मारते. उस सैट की खूबी यह थी कि आसिफ साहब ने उसे पत्थरों से बनवाया था ताकि जब डाकू कुल्हाड़ी से वार करे तो कुल्हाड़ी दीवारों पर लगे जिससे चिंगारियां निकलें और आवाज का प्रभाव भी पड़े. यह शॉट करते हुए राजेन्द्र कुमार बहुत परेशानी महसूस कर रहे थे क्योंकि हर पल उनको अपनी जान का खतरा लगा रहता था. सितम यह था कि आसिफ उस गंजे डाकू से राजेन्द्र कुमार पर भरपूर वार करने को कहते. और तुर्रा यह था कि आसिफ साहब अपनी परफेक्टनेस की धुन के चलते इस सीन को बार-बार रिटेक करते. हर बार उनको कोई न कोई खामी सूझ जाती जिससे राजेन्द्र कुमार को उस गंजे डाकू से मुकाबला करने में फिर खतरा उठाना पड़ता. उनको एक तरकीब सूझी. उन्होंने सोचा कि धुन के पक्के आसिफ साहब न जाने कब इस शॉट से संतुष्ट होकर इसे ओ.के. कहें और तब तक खुदा-न-खास्ता गंजा चूका और उनका काम तमाम हुआ. इस आफत से छुटकारा पाने के लिए राजेन्द्र कुमार शॉट देने के बाद उस गंजे डाकू के हाथ पर सौ रुपए रखकर कहते–भाई, जरा संभल कर कुल्हाड़ी चलाया करो. वरना... लेकिन अफसोस कि इतनी मशक्कत के बाद भी यह फिल्म बन न सकी. इसके फाइनेंसर के साथ के. आसिफ का झगड़ा हो गया. सो, फिल्म शुरु होने के साथ ही बंद हो गई. लेकिन इस फिल्म में राजेन्द्र कुमार के इसी गैटअप को उनके भाई नरेश कुमार ने अपनी फिल्म *गंवार* में इस्तेमाल किया जिसके हीरो भी राजेन्द्र कुमार ही थे.

# जब मनोज कुमार उर्फ भगत सिंह दीवार फांदकर भागे!



नाम था हरिकृष्ण गोस्वामी और उम्र थी तेरह वर्ष. दिल्ली की एक कालोनी के लड़कों ने शहीद भगत सिंह पर एक स्टेज प्रोग्राम का आयोजन किया था. बालक हरिकृष्ण को उसमें सरदार भगत सिंह का रोल मिला. प्रमुख भूमिका के लिए हरिकृष्ण के साथ खूब मेहनत की गई. प्रोग्राम का दिन आया. कालोनी से चंदा लेकर प्रोग्राम किया जा रहा था. इसलिए कालोनी के लोगों से पूरा हॉल खचाखच भरा हुआ था. हरिकृष्ण को भगत सिंह के गेटअप में तैयार किया गया. रोबीली मूंछें और सिर पर भगत सिंह वाली हैट लगाई गई. हरिकृष्ण का यह पहला प्रोग्राम था. इसलिए वह बेहद घबराया हुआ था. उसके होंठ थरथरा रहे थे. आंखें लाल थीं. शरीर में कंपकंपी दौड़ रही थी कि इतने लोगों के सामने स्टेज पर वह भगत सिंह के रूप में कैसा लगेगा, कैसे संवाद बोलेगा. पर्दा उठने वाला था. लोग कौतूहल से स्टेज की तरफ नजरें गड़ाए हुए थे. तभी उद्घोषक ने ऐलान किया. पर्दा हटा, लेकिन भगत सिंह नदारद थे. पर्दा उठते वक्त तालियों की जो गड़गड़ाहट हुई थी वह आयोजकों की घबराहट देखकर गायब हो गई. सन्नाटा छा गया. आयोजक हक्के-बक्के से इधर-उधर ताकने लगे. फिर खोजबीन शुरु हुई कि हरिकृष्ण उर्फ सरदार भगत सिंह कहां गायब हो गए. काफी तलाशने के बाद पता चला कि वह स्टेज से उतर कर पीछे की तरफ से भाग खड़े हुए थे और कालोनी के कंपाउंड की दीवार फांद कर अपने घर जाकर सहमे से बैठे हुए थे. कालोनी में बालक हरिकृष्ण की इस हरकत पर हलचल मच गई. बड़ी फजीहत हुई. लड़कों ने हरिकृष्ण के घरवालों से शिकायत की. पिता ने बालक हरिकृष्ण को उसकी इस हरकत के लिए डांटा भी. और इस घटना के ठीक तेरह बरस बाद उसी दिल्ली में उसी कालोनी के पास स्थित एक थियेटर में फिल्म *शहीद* का प्रीमियर हो रहा था जिसके हीरो थे मनोज कुमार. वही हरिकृष्ण था फिल्म में जो तेरह साल पहले शहीद भगत सिंह का रोल करते वक्त इतना घबराया था कि स्टेज छोड़कर भाग खड़ा हुआ था. खुद मनोज कुमार उस घटना को याद करके *शहीद* के प्रीमियर पर रोमांचित हो उठे थे और अपने मेहमानों व दोस्तों को वह किस्सा याद करके सुना रहे थे. प्रीमियर पर देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री आए हुए थे. किसी फिल्म के प्रीमियर पर देश के प्रधानमंत्री का मौजूद रहना शायद पहली घटना थी. प्रीमियर खत्म हुआ तो *शहीद* के निर्माता और निर्देशक लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ फोटो खिंचवाने के लिए उतावली दिखाने लगे. लेकिन शास्त्री जी की आंखें तो किसी और को ढूंढ रही थीं. उन्होंने कहा कि उस नौजवान से मैं मिलना चाहता हूं जिसने इस फिल्म में भगत सिंह के किरदार को जीवंत कर दिया है. मनोज कुमार की ढूंढ हुई जो उस समारोह में एक कोने में सकुचाए से खड़े थे. उनको शास्त्री जी के सामने लाया गया. शास्त्री जी ने उन्हें गले लगा लिया. और फिर उनके साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाते हुए उन्हें आत्मसंतोष हुआ. ❑